इण्डियन
थिऑसफिस्ट

दिसम्बर 2025 खण्ड 123 अंक 12

विषयवस्तु

एक कदम आगे 5—7
प्रदीप एच. गोहिल

एनी बेसेंट के आदर्शों पर आधारित एक समग्र विजन 8—20
रचना श्रीवास्तव और शैलजा सिंह

समाचार और टिप्पणियां 15—26

सम्पादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक श्याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म–विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

प्रदीप एच. गोहिल

आगे का एक कदम

गुस्सा एक बहुत तेज भावना है, जिसकी पहचान दुश्मनी, नाराजगी या चिढ़ की भावनाओं से होती है। यह अक्सर किसी गलत काम या खतरे के होने पर पैदा होती है, जो बाहरी घटनाओं या अंदरूनी वजहों से शुरू होती है। यह उसमें पैदा होता है, जो अपने दुश्मन के बारे में सोचता है। भले ही कोई गुस्से की भावना को भूल गया हो, यह मन में एक शांत रूप में छिपी रहती है। इसका असर कुछ समय के लिए रहता है। अगर कोई एक ही तरह के विचार या जलन, ईर्ष्या या नफरत को कई बार दोहराता है तो इसका असर ज्यादा समय तक रहता है। जिन दिनों सुबह से शाम तक बहुत सारी परेशानियाँ, निराशाएँ, चिंताएँ होती हैं, उन दिनों कोई छोटी–मोटी बात मन में बहुत जलन पैदा करती है। एक छोटी सी बात से मन का बैलेंस बिगड़ जाता है। एक भी कठोर शब्द व्यक्ति को असंतुलित कर देता है, जबकि जब आप पूरे दिन शांत रहते हैं तो एक जोरदार गाली और कड़ी बुराई भी कोई असर नहीं करती। गुस्सा एस्ट्रल बॉडी में रहता है। लेकिन यह शरीर में वैसे ही रिसता है, जैसे पानी मिट्टी के घड़े के बाहरी हिस्से में छेदों से रिसता है। गुस्से के कई बुरे असर होते हैं, जैसे गर्मी सीसे को पिघला देती है, वैसे ही काम और क्रोध जो मन को गर्म करने वाले फैक्टर हैं, उसे पिघला देते हैं। जब कोई गुस्सा करता है तो मन परेशान हो जाता है, इसी तरह जब मन परेशान होता है तो शरीर भी परेशान हो जाता है। पूरा नर्वस सिस्टम अशांत हो जाता है और ऊर्जा खत्म हो जाती है। गुस्सा दिमाग नर्वस सिस्टम और खून को खराब कर देता है। जब मन में गुस्से की लहर उठती है तो प्राण तेजी से कम्पन करने लगते हैं और व्यक्ति परेशान और उत्तेजित हो जाता है, फिर खून गर्म हो जाता है। खून में कई जहरीले तत्व बन जाते हैं। एक बार एक बच्चे ने अपनी माँ का स्तन जोर से चूसा। वह गुस्से में आ गई और गुस्से के कारण माँ के खून में डाले गए, जहरीले केमिकल प्रोडक्ट्स से जहर होने के कारण बच्चा तुरंत मर गया। गुस्से के ऐसे खतरनाक असर होते हैं। तीन मिनट का तेज गुस्सा भी नर्वस सिस्टम पर इतने बुरे असर डाल सकता है कि चोट को ठीक होने में हफ्ते या महीने लग सकते हैं, गुस्सा समझ पर असर डालता है। जब मन बहुत ज्यादा बेचैन होता है तो इंसान किताब का एक हिस्सा भी ठीक से समझ नहीं पाता और न ही ठीक से सोच पाता है। जब हवा में दीया टिमटिमा रहा होता है, तो

इंसान को चीजें साफ नहीं दिखतीं। इसी तरह जब मन गुस्से से बेचैन होता है, तो उसमें उथल–पुथल मच जाती है और इंसान चीजों को ठीक से देख और समझ नहीं पाता। जो इंसान गुस्से का गुलाम होता है, उसने भले ही खुद को अच्छे से नहाया हो, बाल संवारे हों और सफेद कपड़े पहने हों फिर भी वह गुस्से में आकर बदसूरत दिखता है। चेहरे पर ऐसे लक्षण दिखते हैं, जो मन में गुस्सा होने का इशारा करते हैं। अगर इंसान को गुस्सा आ जाए, तो वह जिंदगी की जंग हार जाता है। अगर किसी का मन जल्दी चिढ़ जाता है तो वह अपने रोज के काम और काम ठीक से नहीं कर पाएगा। गुस्से को खत्म करने के तीन तरीके हैं। कोई इसे इच्छा–शक्ति से निकाल सकता है। यह निश्चित रूप से मुश्किल और थकाने वाला है। यह इंसान की बहुत सारी ऊर्जा खत्म कर सकता है। दूसरा कोई पवित्रता और प्यार के उलटे विचार भी रख सकता है, तीसरा कोई सत्य में रह सकता है, जहाँ कोई विचार मन के बदलाव या मन की लहरें नहीं होतीं। यह तरीका एकदम सही और असरदार है, तीव्रइच्छा पर जीत हासिल करें, फिर गुस्से को काबू करना आसान हो जाएगा जो इसका सिर्फ एक हिस्सा है। प्यार से भी गुस्से पर जीत हासिल की जा सकती है। गुस्सा एक ताकतवर ऊर्जा है, जिसे प्रैक्टिकल बुद्धि से कंट्रोल नहीं किया जा सकता बल्कि इसे शुद्ध तर्क से नियन्त्रित किया जा सकता है। जब कोई नौकर पर गुस्सा करता है, जब वह किसी दिन उसे दूध नहीं देता तो अपने अंदर यह सवाल उठाएंः मैं दूध का गुलाम क्यों बनूं? तब गुस्से की लहर तुरंत, अपने आप शांत हो जाएगी। अगर कोई सावधान और सोच–समझकर काम करे तो यह दूसरे मौकों पर भी नहीं उठेगी। गुस्से को माफी, दया, सब्र, सहनशीलता और सबके प्यार से भी कंट्रोल किया जा सकता है। जो आदमी आपको नुकसान पहुंचाता है, उसे माफ करें और उस पर दया करें। बुराई को एक आशीर्वाद समझें, सेवा और दान से सबके लिए प्यार बढ़ाएं। किसी भी शांत और पवित्र हालत को याद करें, जिसे एक बार ध्यान में लाने पर नफरत दब जाती है और शांति आती है। जब गुस्सा शांत हो जाता है तो बदतमीजी, घमंड और जलन अपने आप गायब हो जाती है। प्रार्थना और भक्ति गुस्से को जड़ से खत्म कर देगी। गुस्से को दूर करने का एक और तरीका है, मन को प्यार के विचार से भरना, अगर आप उदास हैं तो मन को खुशी के विचार से भर लें। जब आपको बहुत ज्यादा गुस्सा आए तो छोड़ दें तुरंत आधे घंटे के लिए उस जगह पर बैठ जाएं, लंबी वॉक करें। पवित्र मंत्र ॐ शांतिः को 108 बार दोहराएं आपका गुस्सा

शांत हो जाएगा। जब आपको गुस्सा आए तो 1 से 30 तक गिनें। गुस्सा शांत हो जाएगा। जब गुस्सा दिखने की कोशिश करे, तो चुप रहें। कभी भी कोई कठोर शब्द या गंदी बात न बोलें, अचेतन मन से बाहर निकलने से पहले ही इसे रोकने की कोशिश करें। आपको बहुत सावधान रहना होगा, यह अचानक बाहर आने की कोशिश करता है। गुस्सा दिखने से पहले मन में एक बेचौनी होती है। आपको मन की इस बेचौनी को खत्म करने की कोशिश करनी चाहिए इससे पहले कि यह चेहरे की मांसपेशियों में ऐंठन, दांतों का भिंचना, आंखों का लाल होना आदि के रूप में बहुत बड़ा रूप ले ले। आपको मन को अच्छी तरह से सजा देनी होगी, जब भी मन में बेचौनी दिखे तो आपको एक दिन के उपवास के जरिए खुद पर काबू रखना होगा और सजा देनी होगी। अगर कोई अपने गुस्से को काबू करने की सच्ची कोशिश करे तो नफरत कम हो जाती है, फिर भी गुस्सा खत्म होने के बाद भी बेसब्री की हल्की सी हलचल बनी रहती है। इस छोटी सी गड़बड़ी का भी इस्तेमाल जान–बूझकर नहीं करना चाहिए, जो इंसान भगवान की तरह जिंदगी जी रहा है उसके लिए यह एक बहुत बड़ी कमी है। चिड़चिड़ापन मन की कमजोरी है, अगर कोई आसानी से चिड़चिड़ा हो जाता है, तो हो सकता है कि वह कई लोगों के साथ नाइंसाफी करे, इसे सब्र, सहनशीलता, दया और प्यार के अभ्यास से दूर करें। मन का शांत होना, सबसे ऊँचे स्व को पाने का सीधा तरीका है, कभी–कभी इंसान अपने व्यवहार और बातचीत में शांत होता है वह स्वभाव और चेहरे के हाव–भाव से मिलनसार और अच्छा होता है और सबसे मिलने के लिए तैयार रहता है। ऐसे इंसान के लिए प्यार बढ़ाना मुश्किल नहीं है। मन को हमेशा सन्तुलन और तालमेल में रखने की कला होनी चाहिए। अपनी आँखें बंद करें, भगवान के स्त्रोत में गहराई से डूबें, उनकी मौजूदगी महसूस करें, उन्हें हमेशा याद रखें काम पर रहते हुए भी हर दिन उनका नाम दोहराएँ और सुबह जल्दी उठकर लोगों से मिलने से पहले ध्यान करें। अगर आप ये चीजें ईमानदारी से करते हैं, तो आपको अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में आसानी से परेशान करने वाली हजारों चीजों से ऊपर उठने के लिए बहुत ज्यादा आध्यात्मिक ताकत मिलेगी और इस तरह आप अपनी भगवान की तरक्की के लिए एक कदम आगे बढ़ पाएँगे।

रचना श्रीवास्तव, शैलजा सिंह

एजुकेशनः एनी बेसेंट के आदर्शों पर आधारित एक पूरी सोच।

जैसा कि नेल्सन मंडेला ने कहा था, 'एजुकेशन सबसे ताकतवर हथियार है,' जिसका इस्तेमाल आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं, इससे हमें एजुकेशन के मूल्य का एहसास होता है, और इसीलिए 21वीं सदी में एजुकेशन एक वैश्विक प्राथमिकता के तौर पर उभरी है, जिसे न सिर्फ पर्सनल ग्रोथ के एक टूल के तौर पर बल्कि सस्टेनेबल डेवलपमेंट की नींव के तौर पर भी पहचाना जाता है। यूनाइटेड नेशंस का सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल 4 (SDG) 4 सबको साथ लेकर चलने वाली और बराबर क्वालिटी वाली एजुकेशन और सभी के लिए जिंदगी भर सीखने के मौके पर जोर देता है, जो इस बात को दिखाता है कि असमानता को दूर करने, शांति को बढ़ावा देने और इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए एजुकेशन बहुत जरूरी है। जैसे–जैसे हम तेजी से हो रहे टेक्नोलॉजिकल बदलाव और सामाजिक–राजनीतिक बदलाव के दौर में आगे बढ़ रहे हैं, एजुकेशन सिस्टम को मुश्किल बदलती मांगों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ना होगा। भारत के मामले में देश की खास डेमोग्राफिक स्थिति की वजह से एजुकेशन की अहमियत और बढ़ जाती है। 65% से ज्यादा आबादी 35 साल से कम उम्र की है इसलिए भारत उस कगार पर है जिसे अर्थशास्त्री डेमोग्राफिक डिविडेंड कहते हैं। हालांकि इस डिविडेंड का फायदा उठाने के लिए पढ़ी–लिखी स्किल्ड और नैतिक रूप से मजबूत युवा आबादी की जरूरत होती है, पूरी और सबको साथ लेकर चलने वाली शिक्षा में सही निवेश के बिना यह संभावना एक डेमोग्राफिक लायबिलिटी बन सकती है। COVID–19 महामारी ने भारत के शिक्षा सिस्टम में बड़ी कमजोरियों को सामने लाया। जब स्कूल लंबे समय तक बंद रहे तो कई स्टूडेंट्स खासकर गरीब बैकग्राउंड के स्टूडेंट्स को गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ऑनलाइन शिक्षा की ओर बदलाव ने एक साफ डिजिटल डिवाइड को सामने लाया,

कम से भी कम स्टूडेंट्स के पास स्मार्टफोन थे और बहुत कम स्टूडेंट्स के पास

प्रिंसिपल और प्रोफेसर पॉलिटिकल साइंस वसंत कन्या महाविद्यालय वाराणसी और नेशनल लेक्चरर इंडियन सेक्शन'' रिसर्च स्कॉलर पॉलिटिकल साइंस डिपार्टमेंट वसंत कन्या महाविद्यालय वाराणसी।

लैपटॉप या डेस्कटॉप थे, जबकि ज्यादातर सरकारी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर कम ही लोग जुड़े। महामारी ने स्टूडेंट्स की मेंटल हेल्थ पर भी बुरा असर डाला, जिसमें एंग्जायटी स्ट्रेस और यहां तक कि नशे की लत बढ़ने की खबरें भी आईं। इसके जवाब में सरकार ने डिजिटल प्लेटफॉर्म (DIKSHA SWAYAM) को बेहतर बनाने, रिमोट लर्निंग के लिए टेलीविजन का इस्तेमाल करने और जरूरतमंद स्टूडेंट्स को फाइनेंशियल मदद देने जैसे कदम उठाए। कुल मिलाकर इस संकट ने भारत में एक ज्यादा मजबूत, बराबर और सबको साथ लेकर चलने वाले एजुकेशन सिस्टम की तुरंत जरूरत को दिखाया। इस अचानक बदलाव से सीखने में बहुत बड़ा गैप आ गया, जिससे कई स्टूडेंट्स अपनी पढ़ाई में पीछे रह गए। जबकि ऑनलाइन क्लास में पढ़ाई जारी रही, वे नैतिक मूल्यों, इमोशनल स्किल्स और आध्यात्मिक विकास, जैसे एजुकेशन के जरूरी हिस्सों से चूक गए, जो जिम्मेदार एडल्ट बनने के लिए जरूरी हैं। इस सपोर्ट की कमी ने कई स्टूडेंट्स को अकेला और परेशान महसूस कराया। एजुकेशन सिस्टम को बेहतर बनाने के लिए न केवल स्टूडेंट्स को पढ़ाई में आगे बढ़ने में मदद करना जरूरी है, बल्कि उन्हें लाइफ स्किल्स और वैल्यूज सिखाकर उनके ओवरऑल डेवलपमेंट पर भी ध्यान देना जरूरी है। इस तरह हम भविष्य में सभी के लिए बेहतर और ज्यादा बराबर की शिक्षा बना सकते हैं।

1– शिक्षा सिर्फ ज्ञान देना नहीं है बल्कि इंसानी काबिलियत को समाज के लिए जिम्मेदार, नैतिक रूप से मजबूत और आध्यात्मिक रूप से जागरूक नागरिक बनाना है। इस सोच को डॉ एनी बेसेंट ने अच्छी तरह से समझाया है, जिन्होंने शिक्षा को एक राष्ट्रीय कर्तव्य और बदलाव लाने वाली ताकत के तौर पर देखा था। यह आर्टिकल शिक्षा के बारे में उनके नजरिए को बताता है, इसके नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं का मूल्यांकन करता है। भारतीय शिक्षा सिस्टम में जेंडर भेदभाव को बताता है और सुधार के लिए प्रैक्टिकल सुझाव देता है, साथ ही आज के भारत में नैतिक और वैल्यू–बेस्ड सीखने की जरूरत पर जोर देता है। एनी बेसेंट (1847–1933) एक खास हस्ती थीं, जिनकी जिंदगी के सफर में समाज सुधार, आध्यात्मिक खोज और राजनीतिक एक्टिविज्म का एक अनोखा मेल था। लंदन में जन्मी बेसेंट ने शुरू में ब्रिटेन में एक समाज सुधारक के तौर पर नाम कमाया और महिलाओं के अधिकारों और सेक्युलरिज्म की वकालत की, लेकिन थियोसॉफी से जुड़ने के बाद जो एक आध्यात्मिक आंदोलन था और जिसका मकसद सभी धर्मों की

बुनियादी एकता को समझना और ऊंचे ज्ञान की खोज करना था, दुनिया को देखने का उनका नजरिया पूरी तरह बदल गया। इस आध्यात्मिक जागृति ने उन्हें भारत आने पर मजबूर किया।

19 वीं सदी के अन्त में जहाँ वह देश के इंटेलेक्चुअल और पॉलिटिकल रिवाइटलाइजेशन में गहराई से शामिल हो गईं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बेसेंट की भूमिका कई तरह की थी, वह न केवल एक पॉलिटिकल एक्टिविस्ट थीं बल्कि एक एजुकेटर और थिंकर भी थीं, जिनका मानना था कि भारत की आजादी जितनी पॉलिटिकल कोशिश थी, उतनी ही स्पिरिचुअल और मोरल कोशिश भी थी। 1917 में इंडियन नेशनल कांग्रेस की प्रेसिडेंट के तौर पर बेसेंट ने होम रूल का सपोर्ट किया और भारतीयों को सेल्फ–गवर्नेंस की तलाश करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने इस विश्वास पर जोर दिया कि सच्ची आजादी के लिए समाज के सभी वर्गों खासकर महिलाओं की तरक्की और एम्पावरमेंट की जरूरत है। उन्होंने सेंट्रल हिंदू कॉलेज ,जो बाद में बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी का हिस्सा बन गया जैसे इंस्टीट्यूशन शुरू किए और शिक्षा को एक ऐसे जागरूक, नैतिक रूप से जागरूक नागरिक बनाने का जरिया माना, जो एक आजाद भारत को आकार देने में योग्य हो। उदाहरण के लिए उनके गाइडेंस में सेंट्रल हिंदू कॉलेज ने एक ऐसे पाठ्यक्रम को बढ़ावा दिया, जिसमें भारतीय फिलॉसफी, संस्कृत अध्ययन और मॉडर्न साइंस का मिक्सचर था, जो उनके समग्र दृष्टि कोश को दिखाता है। उनकी फिलॉसफी, थियोसोफिकल आइडियल्स और भारतीय स्पिरिचुअल ट्रेडिशन्स के सिंथेसिस से डेवलप हुई। थियोसॉफी में दुनिया भर में भाईचारे अंदर की समझ के विकास और पुराने ज्ञान के प्रति सम्मान पर जोर दिया जाता था, जिसने उनके एजुकेशनल विजन पर बहुत असर डाला। बेसेंट का मानना था कि एजुकेशन में सिर्फ रट्टा मारने या वोकेशनल स्किल्स से ज्यादा शामिल होना चाहिए (इसमें मन, शरीर और आत्मा को मिलाकर लोगों के पूरे विकास को बढ़ावा देना चाहिए)। यह नजरिया अंग्रेजों द्वारा थोपे गए, मौजूदा कॉलोनियल, एजुकेशन सिस्टम से बिल्कुल अलग था। ब्रिटिश राज के दौरान भारत में एजुकेशन मुख्य रूप से कॉलोनियल एडमिनिस्ट्रेशन की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन की गई थी। इस सिस्टम में इंग्लिश भाषा की काबिलियत याद करने और कॉलोनियल कंट्रोल बनाए रखने के लिए क्लर्क और ब्यूरोक्रेट्स बनाने पर जोर दिया गया था। भारतीय कल्चरल ज्ञान

और भारतीय शैक्षिक परंपराओं को बड़े पैमाने पर नजरअंदाज किया गया या उन्हें किनारे कर दिया गया। थॉमस मैकाले जैसे लोगों द्वारा बनाई गई, ब्रिटिश एजुकेशन पॉलिसी ने भारतीयों का एक ऐसा वर्ग बनाने की कोशिश की, जो पसंद, राय नैतिकता और समझ में अंग्रेज हों। इस नजरिए ने कई भारतीयों को उनकी परम्परा से दूर कर दिया और भारतीय समाज की बड़ी जरूरतों को पूरा करने में नाकाम रहा।

इसके उलट एनी बेसेंट के एजुकेशनल आइडिया भारत की समृद्ध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परम्परा को वापस पाने के साथ–साथ मॉडर्न साइंटिफिक खोज और क्रिटिकल थिंकिंग को बढ़ावा देने में थे। उन्होंने एक ऐसी एजुकेशन की कल्पना की, जो भारतीय मूल्यों, परंपराओं और सामाजिक सच्चाइयों से गहराई से जुड़ी हो, लेकिन साथ ही यूनिवर्सल इंसानी सच्चाइयों के लिए भी खुली हो। उनका होलिस्टिक विजन स्टूडेंट्स को न केवल इंटेलेक्चुअली बल्कि एथिकली और स्पिरिचुअली भी मजबूत बनाना चाहता था, ताकि वे भारत के सामाजिक और राजनीतिक बदलाव में सार्थक योगदान दे सकें। उदाहरण के लिए महिलाओं की शिक्षा पर बेसेंट का जोर उस समय क्रांतिकारी था, जब महिलाओं की लिटरेसी रेट बहुत कम थी और महिलाओं की भूमिकाएँ बहुत सीमित थीं। यह दिखाता है कि बेसेंट ने जेंडर इक्वालिटी को बड़े राष्ट्रवादी और एजुकेशनल सुधारों से कैसे जोड़ा। थियोसोफी को भारतीय राष्ट्रवाद और सामाजिक सुधार के प्रति कमिटमेंट के साथ जोड़कर बेसेंट ने एक ऐसी एजुकेशनल फिलॉसफी बनाई, जो प्रोग्रेसिव और गहराई से कॉन्टेक्स्टुअल दोनों थी। उन्होंने जेंडर इक्वालिटी, नैतिक विकास और सीखने वालों में सेल्फ–अवेयरनेस को बढ़ावा देते हुए, शिक्षा में भारतीय एजेंसी के महत्व पर जोर देकर कॉलोनियल सोच को चुनौती दी। स्पिरिचुअलिटी एजुकेशन और पॉलिटिकल एक्टिविज्म का यह ऐतिहासिक मेल भारत की आजादी और खुद को जानने की यात्रा में एनी बेसेंट के खास योगदान को दिखाता है।

2.– एनी बेसेंट की एजुकेशन पर फिलॉसफी एक व्यक्ति के ओवरऑल डेवलपमेंट पर निर्भर करती है और इसीलिए उन्होंने सही कहा मैं यह सुझाव दूंगी कि हमारी एजुकेशन का बड़ा मकसद यह है कि, जो बच्चा हमारे हाथ में आता है, उसमें से हर वह काबिलियत बाहर लाए, जो वह अपने साथ लाता है और फिर उस बच्चे को यह यकीन दिलाने की कोशिश की जाए, कि वह अपनी सभी योग्यता, अपनी ताकत, अपनी क्षमताओं को उस कम्युनिटी की मदद और

सेवा में लगाए जो उसका हिस्सा है। इसके जरिए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एजुकेशन का असली उद्देश्य बाहर से ज्ञान थोपना नहीं है, बल्कि उन जन्मजात गुणों और योग्यताओं को बाहर निकालना है, जो एक बच्चे में पहले से ही होती हैं। बेसेंट ने एजुकेशन को एक होलिस्टिक बच्चों पर केंद्रित और नैतिक रूप से आधारित प्रक्रिया के रूप में देखा, जो अच्छी तरह से विकसित सामाजिक रूप से जागरूक लोगों को बनाती है। एजुकेशन एक ऐसा प्रक्रिया है, जो देश के अतीत और उसके वर्तमान के ज्ञान पर आधारित होना चाहिए, इसे पुरानी परंपराओं और राष्ट्रीय आदतों के हिसाब से आकार दिया जाना चाहिए, साथ ही इसे आज की जरूरतों के हिसाब से भी ढाला जाना चाहिए। शिक्षा को सिर्फ उन लोगों के हाथ में नहीं छोड़ना चाहिए, जिन्हें आमतौर पर एजुकेशनल एक्सपर्ट या क्लासरूम कहा जाता है, इंस्ट्रक्टर। बल्कि असली शिक्षा वह है, जो पुरुषों और महिलाओं को शारीरिक, भावनात्मक, नैतिक और बौद्धिक रूप से हर तरह से विकसित ,एक सर्वांगीण विकास तैयार करती है।

3– उनका मानना था कि सच्ची शिक्षा से आत्म–साक्षात्कार और एक सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होना चाहिए, जो ''सा विद्या या विमुक्तये'' के प्राचीन भारतीय आदर्श के अनुरूप हो, जिसका अर्थ है, वह ज्ञान है जो मुक्त करता है। उनके तरीके ने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को जोड़कर और जेंडर–समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देकर मौजूदा औपनिवेशिक शिक्षा मॉडल को चुनौती दी, जिससे ऐसे लोगों का पोषण हो, जो राष्ट्रीय और आध्यात्मिक जीवन में सार्थक योगदान दे सकें।

4– द एजुकेशन ऑफ इंडियन गर्ल्स नाम की एक पत्रिका में उन्होंने जोर दिया कि लड़कियों की शिक्षा के लिए आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाया जाना चाहिए और उनके लिए शिक्षा विदेशी, औपनिवेशिक अवधारणाओं के बजाय प्राचीन आदर्शों के अनुसार होनी चाहिए।

5– एनी बेसेंट का पक्का मानना था कि धार्मिक शिक्षा खासकर, हिंदू धर्म भारत के नैतिक और आध्यात्मिक पुनरुत्थान के लिए जरूरी है। उन्होंने तर्क दिया कि सेक्युलर शिक्षा ने हिंदू युवाओं में धार्मिक तटस्थता पैदा की है, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान कमजोर हुई है। इसका मुकाबला करने के लिए उन्होंने जोर दिया कि हिंदू धार्मिक शिक्षाओं को औपचारिक शिक्षा में शामिल

किया जाए खासकर ऊंची जाति के लड़कों के लिए। यह सोच आज के भारत में भी दिखती है, जहाँ उत्तर प्रदेश और कर्नाटक जैसे कई राज्यों ने किताबों में बदलाव करके हिंदू कहानियों (जैसे रामायण, महाभारत) पर जोर दिया है जबकि मुगल या मुस्लिम योगदानों का जिक्र कम किया है, जो पाठ्यक्रम सुधारों के जरिए धार्मिक पहचान को मजबूत करने के ट्रेंड को दिखाता है। जैसा कि बेसेंट ने कहा ''भारत का उत्थान सिर्फ आध्यात्मिक और एजुकेशनल लाइनों पर सुधार से ही मुमकिन था।''

6– बेसेंट ने सोचा था कि एजुकेशन भारतीयों को ब्रिटिश साम्राज्य में योगदान देने में मदद कर सकती है, लेकिन अपनी हिंदू जड़ों पर नए गर्व के साथ उनका विजन राष्ट्रवाद और कॉलोनियल वफादारी का मिश्रण था, जिसमें पढ़े–लिखे भारतीय अपनी सांस्कृतिक विरासत को फिर से जिंदा करते हुए शाही हितों की सेवा करेंगे। यह विरोधाभास आज के राजनीतिक विमर्श में भी दिखता है, जहाँ NEP 2020 के तहत भारतीय ज्ञान सिस्टम संस्कृत और पुराने विज्ञान को फिर से जिंदा करने के लिए जोरदार कोशिश हो रही है, जो एक बड़े कल्चरल–नेशनल रिवाइवल का हिस्सा है। यह आज का आंदोलन बेसेंट की भारतीय परंपराओं को मॉडर्न लर्निंग के साथ मिलाने की इच्छा जैसा ही है। जैसा कि उन्होंने कहा भविष्य में भारत को ऐसा साम्राज्य बनाने में मदद करनी चाहिए, लेकिन इसके लिए उसके बच्चों को पहले अपना चरित्र बनाना होगा। डॉ एनी बेसेंट ने एजुकेशन के नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं के बारे में बात की और एजुकेशन को एक राष्ट्रीय कर्तव्य भी कहा, उनके अनुसार देश का सच्चा प्रेमी हमेशा लोगों को शिक्षित करने की कोशिश करेगा, क्योंकि देश का भविष्य एजुकेशन पर टिका है (बेसेंट 1917)। उन्होंने जोर दिया कि एजुकेशन पूरी होनी चाहिए, जो क्लासरूम में पढ़ाई से आगे बढ़कर लाइफ स्किल्स तक होनी चाहिए। हालांकि मौजूदा सिस्टम अक्सर लाइफ स्किल्स के बजाय रोजी–रोटी के स्किल्स पर जोर देता है, जिससे होलिस्टिक इंसान बनने के बजाय मशीनें बनती हैं। आजकल एजुकेशन का मकसद डिग्री लेना बन गया है, खासकर सरकारी नौकरी में जाना या कोई प्रोफेशन पाना। हालांकि एजुकेशन का मतलब हर इंटेलेक्चुअल और नैतिक क्षमता को डेवलप करना और एक व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाना है, जिससे वह एक उपयोगी देशभक्त और नेक नागरिक बन सके। इससे एक जरूरी सवाल उठता है कि एजुकेशन से युवाओं में कौन से गुण पैदा होने चाहिए, डॉ बेसेंट के

अनुसार इनमें समझने में तेजी स्थितियों को समझने में अलर्टनेस फैसले लेने में मजबूती काम करने की मजबूत भावना और सही फैसले शामिल हैं। इन खूबियों को फिजिकल और मेंटल ट्रेनिंग दोनों से बढ़ाया जा सकता है, जिससे नैतिक और वैल्यू–बेस्ड एजुकेशन की जरूरत पर जोर दिया जा सकता है। जैसा कि बेसेंट ने कहा'' इमोशंस जिंदगी में अहम रोल निभाते हैं''। वे परिवारों को जोड़ते हैं, कम्युनिटी बनाते हैं और देश बनाते हैं, हालाँकि वे नुकसान पहुँचाने वाले भी हो सकते हैं। इसलिए इमोशंस का कल्चर बहुत जरूरी है। हर खूबी की जड़ इमोशन में होती है और नैतिक एजुकेशन को स्टूडेंट्स को परिवार समाज और देश के प्रति प्यार सम्मान और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना सिखाना चाहिए।

7– डॉ बेसेंट ने शिक्षा के एक खास हिस्से के तौर पर स्पिरिचुअलिटी पर भी जोर दिया। उन्होंने भारत में स्पिरिचुअल और धार्मिक शिक्षा में गिरावट पर दुख जताया, इसे नैतिक स्टैंडर्ड में गिरावट से जोड़ा। उन्होंने नैतिकता के तीन बेस के बारे में भी डिटेल में बताया, जो हैं, इंट्यूशन जिसका मतलब है कॉन्शियस या अंदर की भगवान की आवाज, नैतिक व्यवहार को गाइड करती है। एजुकेशन को स्टूडेंट्स को एक हेल्दी कॉन्शियस डेवलप करने में मदद करनी चाहिए। दूसरा है यूटिलिटी जिसका मतलब है कि नैतिकता इंसानी अनुभव से मिल सकती है, जो काम सबकी खुशी को बढ़ावा देते हैं उन्हें सही माना जाता है। और आखिरी है रिलिजन जो एकता और नैतिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देने वाला तीसरा बेस है। दूसरों को नुकसान पहुँचाना खुद को नुकसान पहुँचाने जैसा है और यह सच्चाई स्टूडेंट्स को सिखाई जानी चाहिए। भारत एक ऐसा देश है, जो दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और इसने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, रक्षा आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की है। हमारी दो प्रमुख महिलाओं कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह की तरह भारत के ऑपरेशन सिंदूर के दौरान प्रमुख आवाजों के रूप में उभरीं, जबकि महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट हैं लेकिन फिर भी भारत में शिक्षा में लिंग असमानताओं की समस्या है।

8– राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के अनुच्छेद 45 जैसी संवैधानिक गारंटी के बावजूद ,जो 14 वर्ष तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा अनिवार्य करता है, शिक्षा की वास्तविक स्थिति विशेष रूप से लड़कियों के लिए निराशाजनक बनी हुई है।

9– और साथ ही प्रगतिशील नीतियों के बावजूद भारतीय शिक्षा में (लिंग असमानताएं, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों के कारण बनी हुई हैं।) जाति और सामाजिक बहिष्कार जैसी चुनौतियां अनुसूचित जातियों (एससी और अनुसूचित जनजातियों एसटी की लड़कियों) को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं, आर्थिक रुकावटें भी एक अहम भूमिका निभाती हैं, कम इनकम वाले परिवार अक्सर पैसों की तंगी के कारण लड़कियों की स्कूलिंग लड़कों के लिए छोड़ देते हैं, जबकि कम उम्र में शादी से उनकी पढ़ाई और भी रुक जाती है। इसके अलावा ग्रामीण इलाकों में एजुकेशन का इंफ्रास्ट्रक्चर काफी नहीं है, जिससे परिवार लड़कियों को स्कूल भेजने से कतराते हैं, जबकि शहरी इलाकों में बेहतर रिसोर्स होने के बावजूद झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाली लड़कियों के लिए अभी भी चुनौतियां हैं। पारंपरिक जेंडर रोल को बनाए रखने वाले कल्चरल नियम महिलाओं को घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित रखते हैं और लड़कियों के आने–जाने को कम करते हैं, खासकर गरीबी के बाद। हालांकि केरल के महिला लिटरेसी मॉडल जैसी सफलता की कहानियां बताती हैं कि कैसे सिस्टमैटिक बदलाव लड़कियों के लिए एजुकेशनल नतीजों को बेहतर बना सकते हैं। अपने ऐतिहासिक, मातृसत्तात्मक कल्चर, शिक्षा में बड़े निवेश और जमीनी आंदोलनों के साथ केरल तरक्की की एक मिसाल बन गया है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसी राष्ट्रीय पहल लड़कियों की स्कूलिंग की और वकालत करती हैं, जो शिक्षा में जेंडर गैप को कम करने के तरीकों पर रोशनी डालती हैं। जैसा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था, ''आप किसी देश की हालत उसकी महिलाओं की स्थिति देखकर बता सकते हैं''। सेंसस 2001 के डेटा से पता चलता है कि 0–14 साल के लगभग 49% बच्चे लड़कियां हैं, फिर भी कई लड़कियों को जन्म से ही सिस्टम में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। लाखों लड़कियों को पढ़ाई में लापरवाही, न्यूट्रिशन की कमी और हेल्थकेयर की कमी का सामना करना पड़ता है। कई को उन्हें कम उम्र में विवाह करने के लिए मजबूर किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप वे स्कूल छोड़ देते हैं और व्यक्तिगत विकास अवरुद्ध हो जाता है। केवल 2% लड़कियां कॉलेज में प्रवेश करती हैं और 76ः प्राथमिक स्तर पर ही पढ़ाई छोड़ देती हैं (उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा निदेशालय 2001)। उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में महिला साक्षरता 70% पुरुष साक्षरता की तुलना में 43% पर चिंताजनक रूप से कम है (रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त भारत 2001)। महिलाओं

को शिक्षित करना न केवल उनके सशक्तीकरण के लिए बल्कि भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए भी महत्वपूर्ण है। जैसा कि डॉ. वल्मीरी रामलिंगस्वामी ने द एशियन एनिग्मा में कहा है ''एक माँ अपने बच्चों से कितना भी प्यार करे, अगर वह गरीब दमित अनपढ़ और अनजान है तो वह उच्च गुणवत्ता की बाल–देखभाल प्रदान नहीं कर सकती है''।

10– इसी तरह डॉ. बी. आर अंबेडकर ने यह भी कहा था कि ''मैं किसी कम्युनिटी की तरक्की को महिलाओं की तरक्की के लेवल से मापता हूँ क्योंकि वह महिलाओं की तरक्की की अहमियत जानते थे''।

11– इंडियन एजुकेशन सिस्टम में कई चौलेंज हैं और इसीलिए सर्व शिक्षा अभियान जैसे– कई एजुकेशनल प्रोग्राम का मकसद एजुकेशनल कमियों को दूर करना है, फिर भी बड़ी कमियाँ अभी भी हैं। सस्टेनेबल क्वालिटी एजुकेशन के लिए मजबूत फाइनेंशियल इन्वेस्टमेंट, ट्रांसपेरेंट एग्जीक्यूशन और भ्रश्टाचार रहित माहौल की जरूरत होती है। इसके अलावा राज्य के प्राइमरी स्कूल खासकर ग्रामीण इलाकों में अभी भी इंफ्रास्ट्रक्चर और स्टाफ की कमी से जूझ रहे हैं। एजुकेशन को एक साइंस के तौर पर भी पहचाना जाना चाहिए न कि बाहरी फैक्ट्स को याद करने का एक अस्त–व्यस्त प्रोसेस। घरों, स्कूलों और कॉलेजों में एजुकेशनल माहौल को डर नहीं बल्कि खुशी और प्यार से तय किया जाना चाहिए। इन लगातार चौलेंज को दूर करने और बेसेंट के होलिस्टिक एजुकेशन के विजन के साथ अलाइन करने के लिए ये चीजें जरूरी हैं। जैसे– स्कूलों और कॉलेजों में वैल्यू एजुकेशन प्रोग्राम लागू करना जिसमें मोरल, इमोशनल और स्पिरिचुअल डेवलपमेंट शामिल हो। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे राउंड 5 सेंसस 2011 या UDISE+ (यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस रिपोर्ट का इस्तेमाल करके मॉडर्न डेटा को पॉलिसी में अपडेट और इंटीग्रेट करें।

12– मिड–डे मील, फाइनेंशियल इंसेंटिव देकर और सेफ्टी और एक्सेसिबिलिटी पक्का करके महिलाओं की एजुकेशन को प्राथमिकता दें। लाइफ स्किल्स, क्रिटिकल थिंकिंग और सिविक रिस्पॉन्सिबिलिटी को शामिल करने के लिए करिकुलम रिफॉर्म्स को स्टैंडर्ड बनाएं। कम्युनिटी को बढ़ावा दें, ईच वन टीच वन जैसे कैंपेन से जुड़ना। और यह पक्का करना कि एजुकेशन गवर्नेंस ट्रांसपेरेंट और करप्शन–फ्री रहे। एनी बेसेंट की एजुकेशनल

फिलॉसफी, थियोसोफिकल प्रिंसिपल्स में गहराई से जुड़ी हुई थी, जिसमें ईश्वर की एकता, यूनिवर्सल ब्रदरहुड, सेल्फ–कंट्रोल और टॉलरेंस शामिल थे। वह एजुकेशन को एक स्पिरिचुअल प्रोसेस के तौर पर देखती थीं, जिसका मकसद अंदरूनी कैपेबिलिटी को डेवलप करना था, जिसमें सिर्फ जानकारी जमा करने के बजाय सेल्फ–रियलाइजेशन पर जोर दिया जाता था।

13– इसका एक हालिया उदाहरण हम भारत सरकार की नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 (NEP 2020) के आने से भी देख सकते हैं, जो एक होलिस्टिक, मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन को बढ़ावा देती है, जिसमें एथिकल रीजनिंग, इमोशनल वेल–बीइंग और लाइफ स्किल्स शामिल हैं, जो बेसेंट के पूरे बच्चे को शिक्षित करने पर जोर देने से मेल खाता है। यह वैल्यू–बेस्ड लर्निंग और इंडियन नॉलेज सिस्टम को शामिल करने की बात करता है, जो स्पिरिचुअल और कल्चरल इंटीग्रेशन का एक मॉडर्न रिफ्लेक्शन है। वह ब्रिटिश–रन इंस्टीट्यूशन्स की आलोचना करती थीं, जो हिंदू स्पिरिचुअल टीचिंग्स को छोड़ देते थे, जिससे इंडियन स्टूडेंट्स में धार्मिक उदासीनता पैदा होती थी। बेसेंट चाहती थीं कि, कल्चरल आइडेंटिटी को बनाए रखने के लिए मॉडर्न सब्जेक्ट्स के साथ हिंदू ट्रेडिशन्स भी पढ़ाए जाएं। वह आध्यात्मिक शिक्षा की कमी को हिंदू युवाओं में धार्मिक तटस्थता और शक के लिए जिम्मेदार मानती थीं।

14– इसीलिए आज के आजाद भारत में कई राज्यों ने स्कूल के सिलेबस में भारतीय महाकाव्यों (जैसे रामायण, महाभारत और भगवद गीता) पर कंटेंट शुरू किया है। उदाहरण के लिए गुजरात और कर्नाटक ने हाल ही में पारंपरिक धर्मग्रंथों को शामिल करने के लिए टेक्स्टबुक में सुधार का प्रस्ताव दिया है, जो फॉर्मल शिक्षा में स्वदेशी आध्यात्मिक शिक्षाओं की वापसी को दिखाता है। उन्होंने हिंदू दर्शन और आधुनिक विज्ञान के मेल को बढ़ावा देने के लिए सेंट्रल हिंदू कॉलेज (1898) की स्थापना की और बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी (BHU) की सह–स्थापना की। उनका मानना था, कि शिक्षा को वैज्ञानिक खोज को अपनाते हुए सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करना चाहिए।

15– इसी तरह हमारे प्रमुख नेताओं और विचारकों के रास्ते पर चलते हुए भारत सरकार NEP 2020 की मदद से मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी (MERU) बनाने को बढ़ावा देती है, जो कला विज्ञान और मानविकी को मिलाते हैं, जो BHU के एक समग्र संस्थान के रूप में बेसेंट के विजन की

भावना के समान हैं। अशोक यूनिवर्सिटी और केरल। यूनिवर्सिटी, जैसे संस्थान अब इस मिले–जुले मॉडल को दिखाते हैं।

उन्होंने भारत के आध्यात्मिक और सामाजिक पुनर्जागरण की वकालत करने में राजा राम मोहन राय और दयानंद सरस्वती जैसे नेताओं के साथ भी खुद को जोड़ा। उनके काम का उद्देश्य शिक्षा के जरिए, हिंदू संस्कृति को फिर से जिंदा करना और अलग–अलग समुदायों के बीच एकता को बढ़ावा देना था। उनका लक्ष्य भारत के आध्यात्मिक सार को फिर से लाना और इसके धार्मिक और सांस्कृतिक समुदायों के बीच एकता को बढ़ावा देना था।

16– यह (NEP 2020) में भी देखा जा सकता है, जिसमें भारतीय विरासत और संस्कृति पर एक सेक्शन शामिल है, जो संस्कृत जैसी क्लासिकल भाषाओं की पढ़ाई को बढ़ावा देता है और आयुर्वेद, योग और भारतीय दर्शन को शिक्षा में शामिल करता है। यह बेसेंट द्वारा अपने थियोसोफिकल शिक्षा मिशन के जरिए बढ़ावा दिए गए, सभ्यता के गौरव को फिर से जगाने की एक सरकारी कोशिश है। डॉ बेसेंट का मानना था कि ''शिक्षा को दया, सहानुभूति, सही सोच और नैतिक फैसले के जरिए नैतिक ईमानदारी बनानी चाहिए।'' उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सच्ची शिक्षा, छात्र में विनम्रता और न्याय के साथ समाज की सेवा करने की क्षमता बढ़ाती है। उन्होंने बच्चों में दूसरों की खुशी और दुख को महसूस करने की क्षमता को डेवलप करने की अहमियत पर जोर दिया।

17– हाल ही में आए (NEP 2020) में भी ऐसा ही पैटर्न देखा गया है, जिसमें स्कूलों को सहानुभूति सहयोग और झगड़े सुलझाना सिखाने के लिए पाठ्यक्रम में सोशल–इमोशनल लर्निंग (SEL) शामिल करने की सलाह दी गई है। हैप्पीनेस करिकुलम, (दिल्ली सरकार और आनंदम पाठ्यचर्या, (मध्य प्रदेश जैसे प्रोग्राम भी फॉर्मल एजुकेशन में इमोशनल, इंटेलिजेंस और माइंडफुलनेस को शामिल करने की कोशिश करते हैं, जो बेसेंट के विजन के जैसा ही है। एनी बेसेंट ने स्पिरिचुअल एजुकेशन को समाज को नया आकार देने, गरीबी असमानता और अज्ञानता को दूर करने के एक तरीके के तौर पर देखा। उन्होंने अच्छे चरित्र और राष्ट्रीय गौरव को बढ़ावा देने में टीचर की भूमिका पर भी जोर दिया। इस तरह एनी बेसेंट के एजुकेशन के बारे में ऊपर बताए गए विचारों के आधार पर हम कह सकते हैं, कि बेसेंट एजुकेशन के लिए स्पिरिचुअल रूप से समृद्ध वैल्यू–लोडेड तरीके की वकालत करती हैं, जो आज

भी बहुत जरूरी है। हालांकि कुछ सामाजिक पहलुओं (जैसे जाति और जेंडर रोल) में यह पुराना है, लेकिन नैतिक सुधार पूरे विकास और सांस्कृतिक सुधार के लिए उनके विजन ने भारत के मौजूदा एजुकेशनल रीस्ट्रक्चरिंग के कई पहलुओं को प्रभावित किया है। (NEP 2020) एक आज के समय का राष्ट्रीय प्रयास है, जो चाहे जानबूझकर हो या अनजाने में उनके कई आदर्शों को दिखाता है जिसमें साइंटिफिक और आध्यात्मिक ज्ञान को मिलाना, नैतिक नागरिकता को बढ़ावा देना, सांस्कृतिक पहचान और गर्व पर जोर देना और यूनिवर्सल समावेशी और मूल्य–आधारित शिक्षा के माध्यम से भाईचारा। डॉ–एनी बेसेंट के थियोसोफिकल आदर्श एक कालातीत रूपरेखा प्रदान करते हैं, जो न केवल व्यक्तिगत विकास, बल्कि राष्ट्रीय प्रगति को भी संबोधित करता है। शिक्षा एक अलग व्यक्तिगत प्रयास नहीं है, बल्कि एक सामाजिक जिम्मेदारी है, जो सद्भाव नागरिकता और राष्ट्र–निर्माण को बढ़ावा देती है। जैसा कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने ठीक ही कहा था ''लैंगिक समानता अपने आप में एक लक्ष्य से कहीं अधिक है''। यह चुनौती का सामना करने गरीबी को कम करने सतत विकास को बढ़ावा देने और सुशासन के निर्माण के लिए एक पूर्व शर्त है।

18– संदर्भ

1. सिन्हा एस. (2023 13 अक्टूबर). "कोविड–19 ने भारत के एजुकेशन सिस्टम को कैसे बदला"। टाइम्स ऑफ इंडिया वॉयसेस।

2. द बर्थ ऑफ न्यू इंडिया/ : एनी बेसेंट/ : फ्री डाउनलोड बॉरो और स्ट्रीमिंग/ : इंटरनेट आर्काइव। (1917)। इंटरनेट आर्काइव https%//archive-org/details/birthofnewindia034955mbp/page/n9/mode/2up

3. सिंह सी. एल. (2019)। "एनी बेसेंट के एजुकेशनल आइडिया"। DOAJ(DOAJः डायरेक्टरी ऑफ ओपन एक्सेस जर्नल्स)। https%//doi-org/10-14516/ete- पेज 207

4. सिंह पी. (2022 जुलाई)। "एनी बेसेंट के शैक्षिक विचार एक आलोचनात्मक विश्लेषण" जर्नल–आर्टिकल,। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन इकोनॉमिक्स एंड सोशल साइंसेज 12(07) पेज 261–263।

5. महोत्सव . (n-d-). युवाओं को शिक्षित करने में एनी बेसेंट का योगदान। आजादी का अमृत महोत्सव, मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर गवर्नमेंट ऑफ इंडिया।

6. सिंह सी. ल. (2019). "एनी बेसेंट के शैक्षिक विचार"। DOAJ (DOAJः डायरेक्टरी ऑफ ओपन क्सेस जर्नल्स)। https%//doi-org/ 10.14516/ete.207 पेज 261

7. वही पेज 259

8. एजुकेशन (TOI 8 मई 2025)। "बायोकेमिस्ट्री और इंजीनियरिंग डिग्री से लेकर युद्ध के मैदान तकः मिलिए कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह से जो ऑपरेशन सिंदूर की मुख्य ब्रीफर्स हैं।"

9. एन.आई.सी. (n-d-). संवैधानिक प्रावधान भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय। https%//www-education-gov-in/directive_principles_of_state_policy_article&45

10. रामलिंगस्वामी वी. (1996). एशियन पहेली। "प्रोग्रेस ऑफ नेशंस 1996" में। यूनिसेफ।

11. बी.आर. अंबेडकर का एक कथन। (n-d-) https%//www-goodreads-com/ quotes/609055&i&measure&the&progress&of&a&community&by&thedegree

12. UDISE+ UDISEPLUS UDISE UDISE CODE स्कूल डायरेक्टरी मैनेजमेंट स्कूल डेटा कैप्चर। (n-d-). UDISE+- https%//udiseplus-gov-in/#/en/home

13. गौतम एन.ए. और उपाध्याय एन. डी. एस. (2020). "डॉ. एनी बेसेंट और भारत में शिक्षा में उनका योगदान"। EPRA इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक एंड बिजनेस रिव्यू पेज 15

14. वही पेज 12

15. वही पेज 14

16. वही पेज 13

17. वही पेज 16

18. अन्नान के. (n-d-). जेंडर इक्वालिटी पर UN सेक्रेटरी–जनरल का बयान। यूनाइटेड नेशंस। https%//www-un-org

समाचार और नोट्स

दिल्ली शंकर लॉज लगातार विभिन्न थियोसोफिकल विषयों पर व्याख्यान श्रृंखला आयोजित करता रहा है। मंचों में सदस्यों द्वारा ध्यान से सुनने और शंकाओं को दूर करने के लिए प्रश्न पूछने की सक्रिय भागीदारी का उद्देश्य वक्ताओं को गुप्त ज्ञान के विज्ञान को संशोधित करने और सदस्यों को सूक्ष्म शरीरों में कार्यात्मक कामकाज को समझाने के लिए प्रेरित कर रहा है। शंकर लॉज, बिशप सी डब्ल्यू लीडबीटर और डॉ एनी बेसेंट की पुस्तकों को सक्रिय रूप से पढ़ने के लि, बढ़ावा देता है, क्योंकि साहित्य को एच.पी. ब्लावात्स्की के युग में द अर्हत्स द्वारा युवा सदस्यों के लिए मानकीकृत और व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया था। अक्टूबर 2025 में लॉज द्वारा निम्नलिखित बैठकों का आयोजन किया गयाः राष्ट्रीय व्याख्याता भाई बी. डी. तेंदुलकर ने 4 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन बैठक में ''इच्छा की उत्पत्ति इसके नियंत्रण और उदात्तीकरण'' की व्याख्या की। राष्ट्रीय व्याख्याता डॉ. राजीव गुप्ता आर. के. माथुर ने 18 अक्टूबर को हुई लॉज की ऑनलाइन मीटिंग में ''शिव सूत्र पार्ट IX'' के बारे में बताया। गुजरात के सीनियर सर्जन और मेंबर डॉ– भरत पटेल ने हेल्थ और लाइफस्टाइल के बारे में डिटेल में बात की। यह लेक्चर 11 अक्टूबर 2025 को भावनगर, लॉज में हुआ था। उन्होंने ''सरल, प्राकृतिक और तनाव मुक्त जीवन जीने पर जोर दिया। इस टॉक में कुशीनगर, लॉज के भी बड़ी संख्या में मेंबर शामिल हुए। भावनगर, लॉज ने 25 अक्टूबर को दीपावली और न्यू ईयर गेट–टुगेदर का इंतजाम किया था, जिसमें मिलकर प्रार्थना की गई और शुभकामनाओं का लेन–देन हुआ।

दिल्ली शंकर लाज अलग–अलग थियोसाफिकल विषय फेडरेशन का आयोजन 14 से 16 नवंबर 2025 तक रोहित लॉज, अहमदाबाद द्वारा दादा भगवान त्रि मंदिर परिसर अडालज, गांधीनगर के पास गुजरात में किया गया था। भारतीय अनुभाग के अध्यक्ष श्री प्रदीप एच. गोहिल ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई। बॉम्बे थियोसोफिकल फेडरेशन के अध्यक्ष श्री विनायक भाई पंड्या और राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता और संस्कृत विद्वान प्रोफेसर डॉ. विजय भाई पंड्या, मुख्य अतिथि थे। गुजरात थियोसोफिकल फेडरेशन के विभिन्न लॉज से 150 प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया। 14

नवंबर को सुबह 9 बजे मुख्य अतिथि और मुख्य अतिथियों के साथ जीटीफ के अध्यक्ष हर्ष वर्धन शेठ, उपाध्यक्ष नरसिंह भाई ठाकरिया और सचिव सी.के. सोनी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया। सभी धर्मों की प्रार्थना और सार्वभौमिक प्रार्थना के बाद मुख्य अतिथि श्री प्रदीप एच. गोहिल ने ''थियोसोफिकल सोसाइटी विश्व शांति के लिए खड़ी है'' विषय पर उद्घाटन भाषण दिया। फिर वे सुबह 10.15 बजे निकल गये क्योंकि उन्हें केरल फेडरेशन के सालाना कॉन्फ्रेंस में शामिल होने के लिए एलप्पी जाना था। रोहित, लॉज के प्रेसिडेंट राजेश्री. शाह ने पार्टिसिपेंट्स का गर्मजोशी से स्वागत किया। दोपहर में छोटी बातचीत का सेशन हुआ। डॉ. विजय भाई पंड्या ने शाम के सेशन में बात की और उनकी बातचीत का सब्जेक्ट था, ''वाल्मीकि रामायण इंसानियत के हमेशा रहने वाले मूल्यों का महाकाव्य''। 15 नवंबर को कुछ लॉज के मेहनती मेंबर्स ने छोटी बातचीत की। इसके अलावा शाम को TOS सेशन हुआ और फिर BF प्रेसिडेंट श्री विनायक भाई पंड्या ने खास लेक्चर दिया। 16 नवंबर को क्लोजिंग सेरेमनी हुई, जिसमें नीचे दी गई नई चुनी हुई एग्जीक्यूटिव बॉडी की घोषणा की गईः प्रेसिडेंट – श्री नरसिंह भाई ठाकरिया, वाइस प्रेसिडेंट – श्री सी.के. सोनी, सेक्रेटरी – श्री गिरीश नीलगिरी, को–सेक्रेटरी – श्री अतुल दर्जी, ट्रेजरर – श्री हितेश पटेल

इस प्रकार वार्षिक सम्मेलन बहुत प्रेरणा प्रोत्साहन और उत्साह के साथ समाप्त हुआ। केरल थियोसोफिकल फेडरेशन का वार्षिक सम्मेलन 15 और 16 नवंबर 2025 को इसके प्रशासक भाई के नेतृत्व में अन्नपूर्णी लॉज अल्लापुझा, में आयोजित किया गया था। एन.सी. कृष्णा 51 प्रतिनिधियों की उपस्थिति पिछले 10 वर्षों में सबसे अधिक थी। सम्मेलन के दौरान फेडरेशन काउंसिल ने बैठक की और निम्नलिखित पदाधिकारियों को सर्वसम्मति से चुनाः

1 अध्यक्षः भाई एस शिवदास

2 उपाध्यक्षः भाई टी.के. नायर

3 सचिव : बहन शोभा प्रकाश

4 कोषाध्यक्षः भाई मधुसूदन पिल्लई

परिषद ने दो सदस्यों को क्षेत्रीय सचिव और तीन सदस्यों को कार्यकारी समिति के लिए भी चुना। इसके साथ ही केरल फेडरेशन का निलंबन खत्म हो

गया है और नई टीम ने 17 सितंबर से अपने सभी लॉज का प्रशासन अपने हाथ में ले लिया है। 16–11–2025 भारतीय अनुभाग के अध्यक्ष भाई – प्रदीप एच. गोहिल ने कठिन अवधि के दौरान प्रशासक के रूप में भाई एन.सी. कृष्णा द्वारा निभाई गई भूमिका की सराहना की।

उत्कल

16 वं 17 अगस्त को यूटीफ, भवन में सुजीत महापात्रा मेमोरियल स्टडी क्लास का आयोजन किया गया। गुजरात फेडरेशन की बहन वर्षा पटेल के अध्ययन का विषय था ''मनुष्य के संभावित विकास का मनोविज्ञान''। महान थियोसाफिस्ट बहन शैलवाला महापात्रा की समृति में अध्ययन शिविर का संचालन यू.टी.एफ. भवन में बहन मितालिनी चौधरी किया गया। 20 और 21 सितम्बर को डा. चितरंजन शतपथी और बहन मितालिनी चौधरी ने दैनिक समस्या में TS और थियोसाफिकल समाधान के बारे में चर्चा की। 13 सितंबर को हुई इस बैठक से कई युवा प्रभावित हुए और ''लिंगराज लॉज'' नाम से एक नया लॉज बनाया गया, डॉ. चिन्मय महापात्र और डॉ. चितरंजन सतपाही ने दौरा किया, 5 सितंबर को सैलबाला महाविद्यालय में ,एक लेक्चर हुआ और वहां उन्होंने स्टूडेंट्स के साथ ''जीवन और थियोसोफी के महत्व'' पर चर्चा की। चर्चा के बाद सवाल–जवाब का सेशन हुआ। डॉ. दीपा पाधी ने ''दीवारें नहीं पुल बनाने में करुणा और सहानुभूति'' टॉपिक पर एक लेक्चर ऑर्गनाइज किया। यह 19 सितंबर को रामादेवी विमेंस यूनिवर्सिटी में हुआ, जिसमें डॉ. दीपा पाधी, डॉ. चित्तरंजन सतपथी और बहन पूर्णमासी पटनायक ने ऊपर बताए, गये टॉपिक पर बातचीत की। बहन पूर्णमासी पटनायक ने 28 अगस्त को ऑस्कर सिटी भुवनेश्वर, में एक प्राइवेट घर में कर्म के नियम पर बातचीत की। भाई प्रदीप महापात्रा ने ''लेटर्स फ्रॉम द मास्टर्स ऑफ द विजडम (सेकंड सीरीज'' किताब के लेटर्स नंबर 5–6 पर ऑनलाइन बातचीत की। यह 29 सितंबर को हुआ। उत्कल, थियोसोफिकल फेडरेशन ने 1 अक्टूबर को यूटीफ भवन, में डॉ. एनी बेसेंट का जन्मदिन मनाया। विभिन्न लॉज के सदस्य और समर्थक बैठक में शामिल हुए। इस अवसर पर भाई प्रदीप महापात्रा ने ''एनी बेसेंट एक महान गुप्तविद्याविद थीं'' विषय पर बात की। भाई प्रमोद मिश्रा ने शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में एनी बेसेंट का योगदान और बहन स्मिताप्रज्ञान ने 'एनी बेसेंट को समाज सुधारक के रूप में' विषय पर बात की। 4 अक्टूबर को''युवाओं की चुनौतियाँ और थियोसोफिकल समाधान'' विषय पर एक युवा

कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में''मैं वादा करता हूँ'' विषय पर संगोष्ठी में निम्नलिखित 5 युवाओं ने विचार व्यक्त किए। बहन स्वधा संवृद्धि परिजा ने ''उज्ज्वल रूप पर'' विचार व्यक्त किया, अनन्या पति का टॉपिक ''नाइटली डीड्स'' था और देवांशी की कविता ''आई प्रॉमिस'' थी। बहन स्मिताप्रज्ञान पात्रो ने इस थीम पर लेक्चर दिया। UF प्रेसिडेंट ने 25 अक्टूबर को एक ''पैलिटिव केयर ट्रेनिंग ऑर्गनाइज'' की जिसमें 45 नर्सिंग स्टूडेंट, 4 टीचर, डॉक्टर और मेंबर मौजूद थे। सीनियर डॉक्टरों ने उन्हें सिखाया कि पैलिटिव केयर क्या है, कोई कैसे देखभाल करता है और दोनों को सपोर्ट करता है। मरीज और उसके परिवार के सदस्य। एम्स मेडिकल कॉलेज के प्रेरक वक्ता ने ''अपनी नैतिकता विकसित करने और उदास परिवार के सदस्यों का समर्थन'' करने के बारे में बात की। फिर आध्यात्मिक शिक्षक ने ''कर्म और निस्वार्थ सेवा'' के बारे में बहुत अच्छी तरह से बात की। कटक लॉज ने सप्ताह में 4 दिन ''देवाचनिक प्लेन और सेल्फ कल्चर'' पुस्तक पर अध्ययन कक्षाएं आयोजित कीं। बहन वर्षा पटेल ने ''चट्टान से भगवान तक'' विषय पर व्याख्यान दिया। यह 17 अगस्त को कटक लॉज, में आयोजित किया गया था। डॉ. पार्थ सारथी सारथी प्रसाद सारंगी ने बालेश्वर लॉज, में हर रविवार को अध्ययन कक्षा आयोजित की। बाराबती लॉज, के सचिव भाई भबानी शंकर मोहंती ने प्रत्येक सोमवार को शाम 6 बजे राष्ट्रीय व्याख्याताओं और प्रख्यात वक्ताओं को आमंत्रित करके ऑनलाइन थियोसोफिकल व्याख्यान का आयोजन किया। यूपी और उत्तराखंड फेडरेशन, डॉ. एनी बेसेंट का जन्मदिन 1 अक्टूबर को धर्म लॉज, लखनऊ, द्वारा मनाया गया। यूस. पांडे. की टाक ''इनविजिबल वर्ल्ड्स'' थी। लॉज में 15, 22 और 29 अक्टूबर 2025 को ''द पाथ ऑफ डिसाइपलशिप'' किताब की पढ़ाई हुई। बहन वसुमती अग्निहोत्री ने 5 अक्टूबर को प्रज्ञा लॉज, में ''एनी बेसेंट की जिंदगी और काम'' के बारे में बात की, फिर 12 अक्टूबर को उन्होंने ''प्रैक्टिकल ऑकल्टिज्म'' में, रोजाना की जिंदगी के सुझावों के बारे में बताया। भाई शिखर अग्निहोत्री ने 26 अक्टूबर को वहाँ स्वामी आनंद मेमोरियल में लेक्चर दिया, जिसमें उन्होंने कर्म के नियम के बारे में बात की। भाई उमापति ने 9 अक्टूबर को निर्वाण लॉज आगरा में ''विनय पत्रिका'' के बारे में बात की और भाई वी.पी. त्रिपाठी के 23 अक्टूबर के टॉक का टॉपिक ''मन की शक्ति'' था। इसके अलावा लॉज ने 16 अक्टूबर को पुनर्जन्म पर एक सिंपोजियम ऑर्गनाइज किया और 30 अक्टूबर को सिंपोजियम का

सब्जेक्ट ''स्वर्ग और नर्क था''। डॉ. एनी बेसेंट का जन्मदिन 1 अक्टूबर को गोरखपुर के सर्वहितकारी लॉज में मनाया गया, जिसमें डॉ. द्वारिका प्रसाद ने डॉ बेसेंट द्वारा अलग–अलग क्षेत्रों में किये गये काम पर एक टॉक दी। दूसरी टॉक लॉज में दिए गये व्याख्यानों में भाई यस. वी. आर. मिश्रा द्वारा ''थियोसोफी इज अल्ट्रूइज्म'' भाई आर. पी. सिंह द्वारा ''ओम और थियोसोफी'' और भाई अजय राय द्वारा ''किंडल योर इटरनल लाइट'' शामिल थे। ये तीन वार्ता क्रमशः 8,15 और 22 अक्टूबर को हुई थीं। भाई कमलाकर मिश्र और संजय मिश्र ने चरित्र निर्माण द्वारा राष्ट्र निर्माण के बारे में समझाया और यह वार्ता 17 अक्टूबर को बासुपुर (गाजीपुर)– लक्ष्मी नारायण लॉज में हुई थी। भाई यस. वी. आर मिश्रा ने अंक सात का आध्यात्मिक महत्व समझाया। यह 25 अक्टूबर को जोगिया– सत्यदर्शन लॉज, में हुआ था। भाई शेष नाथ त्रिपाठी ने 27 अक्टूबर को जिगिना (बांसगांव) ब्रह्मविद्या लॉज में एनी बेसेंट के जीवन और कार्य के बारे में बात की थी। शैली सिंह ने 5 अक्टूबर को कानपुर के चौहान लॉज में एक टॉक दी और उनके टॉक का टॉपिक था ''एनी बेसेंट उनका जीवन और काम''। भाई शिव बरन सिंह ने 12 अक्टूबर को वहां ''इंट्यूशन'' के बारे में बात की और भाई एस. के. पांडे ने भी 19 अक्टूबर को इसी टॉपिक पर अपने विचार रखे। इसके अलावा भाई एस. के. पांडे ने 26 अक्टूबर को वहां भारत समाज पूजा करवाई। 1 अक्टूबर को मिर्जापुर के नारायण लॉज में डॉ एनी बेसेंट का जन्मदिन मनाया गया। फिर 12 अक्टूबर को लॉज में ''द की टू थियोसॉफी'' किताब की स्टडी करवाई गई। 26 अक्टूबर को भाई यू. यस. पांडे ने वहां थियोसॉफी का इंट्रोडक्शन टॉपिक पर एक टॉक दी। 5 अक्टूबर को नोएडा लॉज में एक डिस्कशन ऑर्गनाइज किया गया, जिसमें पार्टिसिपेंट्स ने एनी बेसेंट के जीवन और काम के बारे में अपने विचार रखे। बहन सुव्रलीना मोहंती ने एनी बेसेंट बेसेंट थियोसोफिस्ट टॉपिक पर एक टॉक दी। यह 5 अक्टूबर को गाजियाबाद के प्रयास लॉज में हुआ था। इसके अलावा उन्होंने 19 अक्टूबर को उसी जगह पर स्टडी की और स्टडी के लिए किताब एनी बेसेंट की लिखी ''हिंट्स ऑन स्टडी ऑफ द भगवद गीता'' थी। बहन अर्चना पांडे ने 5 अक्टूबर को प्रयागराज के आनंद लॉज, में बात की और उनके टॉक का टॉपिक था ''थियोसोफी इज अल्ट्रूइज्म''। 26 अक्टूबर को उसी जगह पर हुआ, उनका दूसरा टॉक इस टॉपिक पर था ''एस्ट्रल प्लेन''। भाई सुदीप कुमार मिश्रा के 12 अक्टूबर को वहां आयोजित वार्ता का विषय था, ''एनी बेसेंट का अंतिम

संबोधन'' और भाई के. के. जायसवाल के 19 अक्टूबर का विषय था ''मैं कौन हूँ''। काशी तत्व सभा के सदस्यों और वाराणसी के अनुभाग मुख्यालय में भारतीय अनुभाग के कर्मचारियों द्वारा 1 अक्टूबर को डॉ एनी बेसेंट को पुष्पांजलि अर्पित की गई। सार्वजनिक वार्ताः भाई यू. यस. पांडे ने ''अदृश्य दुनिया का ज्ञान'' विषय पर अतिथि वक्ता के रूप में बात की। यह वार्ता 05 अक्टूबर को पिरामिड मेडिटेशन चैनल पीमसी द्वारा ऋषिकेश में 04 से 08 अक्टूबर 2025 तक आयोजित महा योग–ध्यान कुंभ के दौरान आयोजित की गई थी। भाई पांडे जी ने वहां मौजूद कई अन्य व्यक्तियों के साथ समूहों में या व्यक्तिगत रूप से चर्चा के दौरान थियोसोफिकल शिक्षाओं के कुछ बुनियादी बिंदुओं को पेश करने का अवसर भी लिया। भाई यस. वी. आर. मिश्रा ने 23 अक्टूबर को गोरखपुर के के. आई. पी. एम इंजीनियरिंग कॉलेज में थियोसोफिकल सोसाइटी का इतिहास और उद्देश्य पर बात की। छात्रों, शिक्षकों, युवाओं को संबोधनः भाई यूस पांडे ने 27 अक्टूबर को ''मूल्य वर्धित कार्यक्रम'' के अंतर्गत वी. के. एम. वाराणसी की स्नातक छात्राओं के एक समूह को संबोधित किया। उनके व्याख्यान का विषय था, 'थियोसोफी का परिचय''। भारतीय अनुभाग कार्यक्रम में योगदानः प्राचीन ज्ञान के प्रकाश में आत्म संस्कृति– अध्याय 12 (लेखक– आई. के. तैमिनी पुस्तक का ऑनलाइन अध्ययन बहन विभा सक्सेना द्वारा 12 और 26 अक्टूबर को आयोजित किया गया था)। टी. एस. फिलीपींसः भगवद गीता पुस्तक का ऑनलाइन अध्ययन बहन विभा सक्सेना द्वारा क्रमशः 01, 08, 15 और 22 अक्टूबर को सुगम बनाया गया था। विभा सक्सेना ने ''Unfolding Human Potential'' टॉपिक पर ऑनलाइन टॉक दी, जो 28 अक्टूबर को वेलिंगटन लॉज के तत्वाधान में हुई थी। इंटरनेशनल हेडक्वार्टर के भाई शिखर अग्निहोत्री ने इंटरनेशनल प्रेसिडेंट मिस्टर टिम बॉयड के साथ ''Crossroads of Courage & A Dialogue on Annie Besant'' थीम पर बातचीत की। यह 1 अक्टूबर को अड्यार में हुई थी। थियोसोफिकल कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर भारतीय अनुभाग 13 से 15 मार्च 2026 तक वाराणसी में कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर रहा है। शिविर का निर्देशन अंतरराष्ट्रीय वक्ता और राष्ट्रीय व्याख्याता भाई यू. एस. पांडे करेंगे। कार्यवाही हिंदी और अंग्रेजी में संचालित की जायगी। टी. एस. का कोई भी सदस्य इस शिविर में भाग लेने के लिए पात्र है। प्रत्येक महासंघ कुछ टी. एस. सदस्यों को इस शिविर में भाग लेने के लिए भेज सकता है। 12 मार्च के

दोपहर के भोजन से 16 मार्च के नाश्ते तक रहने और खाने की व्यवस्था की जायेगी। प्रत्येक प्रतिभागी को अपने यात्रा व्यय और भोजन का खर्च वहन करना होगा और साथ ही सामान्य दर की आधी दर पर आवास का खर्च भी उठाना होगा। प्रतिभागी 100 रुपये का भुगतान करके पंजीकरण करा सकते हैं। पंजीकरण, भोजन और आधे दर पर आवास शुल्क के लिए गैर एसी बेड के लिए 2500/– रुपये और एसी बेड के लिए 3300/– रुपये निम्नलिखित विवरण के साथ थियोसोफिकल सोसाइटी के भारतीय अनुभाग के बैंक खाते में जमा करें:, बैंकः बैंक ऑफ बड़ौदा लक्सा रोड शाखा वाराणसी खाता संख्याः 28600100018425 IFSC% BARB0LUXABS (पांचवां अक्षर शून्य है, राशि जमा करने के बाद संबंधित सदस्य को बैंक रसीद की फोटो कॉपी उसका नाम लॉज महासंघ भारतीय अनुभाग मुख्यालय में आगमन की तारीख और समय प्रस्थान की तारीख और समय जैसे विवरण के साथ भारतीय अनुभाग के सचिव को ईमेल आईडीः theosohyvns@gmailcom पर भेजना चाहिए। पंजीकरण 1 जनवरी 2026 से शुरू होगा और 25 फरवरी 2026 को बंद हो जायेगा, रजिस्ट्रेशन 1 मार्च 2026 तक कैंसल किया जा सकता है तब जमा की गई रकम में से सिर्फ Rs 100/– काटकर वापस कर दी जाएगी। 1 मार्च के बाद किसी भी कैंसलेशन पर कोई रिफंड नहीं किया जाएगा।